CBCS – स्नातक – सेमेस्टर – तृतीय – मैथिली (MJC)

MJC – 3

विषय – मैथिली साहित्यक मध्यकालीन काव्य

इकाइ – 01 – शीर्षक – महाकवि विद्यापतिक जीवन ओ साहित्य

पाठ प्रस्तोता – डॉ॰ प्रवीण कुमार 'प्रभंजन', सहायक प्राध्यापक
मैथिली विभाग, यू॰ आर॰ कॉलेज, रोसड़ा ।

(क) वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर –

1. 'पुरुष-परीक्षा'क लेखक के छथि – ?
2. 'पुरुष-परीक्षा'क अनुवादक के छथि – ?
3. विद्यापतिक कोनो उपनामक उल्लेख करू –
4. विद्यापतिक आयु अवसान कहिया भेल – ?
5. विद्यापतिक अवहट्ट कृति अछि – ?
6. गोसाउनिक गीतक कवि छथि – ?
7. 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' किनकर उक्ति थिक – ?
8. शृंगारक स्थायीभाव की थिक – ?
9. 'भूपरिक्रमा' ग्रंथक रचनाकार छथि – ?
10. 'मणिमंजरी' कोन विधाक रचना अछि – ?

उत्तर – क्रमशः 1. विद्यापति, 2. आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन', 3. कवि कंठहार, 4. 'कातिक धवल त्रयोदशि जान' 5. कीर्तिलता, 6. विद्यापति, 7. आचार्य विश्वनाथ, 8. रति, 9. विद्यापति, 10. नाटक ।

(ख) मिथिलाक्षर लिखू –

खने खन नयन कोन अनुसरई । खने खन वसन धूलि तनु भरई ।।
खने खने दसन छटा छुट हास । खने खन अधर आगु गहु वास ।।

उत्तर – 𑒐𑒢𑒹 𑒐𑒢 𑒢𑒨𑒢 𑒏𑒼𑒢 𑒁𑒢𑒳𑒮𑒩𑒃 । 𑒐𑒢𑒹 𑒐𑒢 𑒫𑒮𑒢 𑒡𑒴𑒪𑒱 𑒞𑒢𑒳 𑒦𑒩𑒃 ॥
𑒐𑒢𑒹 𑒐𑒢 𑒠𑒮𑒢 𑒕𑒙𑒰 𑒕𑒳𑒙 𑒯𑒰𑒮 । 𑒐𑒢𑒹 𑒐𑒢 𑒁𑒡𑒩 𑒂𑒑𑒳 𑒑𑒯𑒳 𑒫𑒰𑒮 ॥

01-11-25

urcollegerosera@gmail.com

C.B.C.S ॐ स्नातक — ॐ सेमेस्टर-प्रथम — ॐ मैथिली (M.J.C)

विषय — मैथिली साहित्यक आदिकाल

इकाइ -01 — शीर्षक — काल - विभाजन (मैथिली साहित्यक प्रसंग)

उत्तर — संसार मे सृष्टिक संरचना जीवनक आधार अछि। मानव जीवन प्रकृतिक अनुपम अवदान मानल जाइत अछि। मानव मनोदशाक आधार पर समाजक निर्माण होइत अछि। व्यक्ति वा सामूहिक मानव मनोदशाक रूपमे परिवर्तन वा प्रभावक संग साहित्य स्थापित होइत अछि। तेँ साहित्यकेँ समाजक दर्पण कहल गेल अछि। पश्चात साहित्यक इतिहासक निर्माण होइत अछि। ओहि इतिहासे लेखनक अनुरूप साहित्यिक काल - विभाजनक स्वरूपक अवधारणा बनैत अछि। तखन इतिहासकार समय सापेक्ष वैशिष्ट्यक आधार पर सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक आ धार्मिक परिप्रेक्ष्यमे साहित्यिक बोध लेल नामकरण कऽ उल्लेख करैत छथि। एहि आधार सँ मैथिली साहित्यक काल - विभाजन आदिकाल, मध्यकाल आ आधुनिक कालक रूपमे कैल गेल अछि। आन साहित्यक काल - विभाजन जकाँ मैथिली साहित्यक काल - विभाजनक क्रम मे विभिन्न विद्वानक मत भिन्नता निम्न लिखित रूपेँ भेल अछि —

(क) डॉ उमेश मिश्रक मतानुसार — (कृष्णजन्मक भूमिका) —

(i) आदिकाल — 1000 ई० सँ 1300 ई० धरि
(ii) मध्यकाल — 1300 ई० सँ 1800 ई० धरि
(iii) आधुनिक काल — 1800 ई० सँ अद्यपर्यन्त

(ख) डॉ० सुभद्र झाक मतानुसार — फारमेशन आफ मैथिली लैंग्वेज

(i) प्राचीन मैथिली — 1000 ई० सँ 1300 ई० धरि
(ii) मध्य मैथिली — 1300 ई० सँ 1800 ई० धरि
(iii) आधुनिक मैथिली — 1800 ई० सँ अद्यपर्यन्त

उपर्युक्त काल-विभाजनमे डॉ० उमेश मिश्र मैथिली रचना आ भाषाक विभिन्न रूपक आधार पर काल-विभाजन करलनि अछि ओतहि डॉ० सुभद्र झा मैथिलीक साहित्यिक परंपराक आधार पर काल - विभाजन नहि कऽ भाषाक विकासक आधार मानलनि अछि। ई मत भिन्नताक संग - संग पूर्णतः समीचीन बोधक नहि अछि।

[signature] 01-11-24

(ग) डॉ० जयकान्त मिश्र — (हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर)
(i) प्राग्रुप मैथिली काल — 800 ई० सँ 1200 ई० धरि
(ii) आदि काल — 1300 ई० सँ 1600 ई० धरि
(iii) मध्य काल — 1600 ई० सँ 1860 ई० धरि
(iv) आधुनिक काल — 1860 ई० सँ अद्यपर्यन्त

(घ) स्व० कुमार गंगानन्द सिंह — (मैथिली साहित्यक प्रगति)
(i) आदिकाल — 800 ई० सँ 1300 ई० धरि
(ii) मध्यकाल — 1300 ई० सँ 1800 ई० धरि
(iii) आधुनिक काल — 1800 ई० सँ अद्यपर्यन्त

उपर्युक्त काल विभाजनमे डॉ० जयकान्त मिश्रक मत तर्कपूर्ण आ वैज्ञानिक रूपेँ समीचीन बुझना जाइत अछि। मुदा 1200 ई० सँ 1300 ई०क बीचक रचना उल्लेख नहि अछि जे किछु ठीक नहि बुझना जाइछ।

मैथिली साहित्यक प्रसिद्ध समालोचक प्रो० रमानाथ झाक मतानुसार मैथिली साहित्यकेँ दुइ गोट महान युग बोधक मानैत — (i) विद्यापति युग — कृष्ण काव्यक युग — प्राचीन युग आ (ii) चन्दा झाक युग — राम काव्य युग — नवीन युग करलनि। रचना पद्यातिक आधार पर उपर्युक्त काल विभाजन समीचीन होइतहुँ सर्वाधिक उपयुक्त नहि अछि।

काल-विभाजनक क्रममे डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश', 'मैथिली साहित्यक इतिहास, डॉ० शैलेन्द्र मोहन झा, 'आधुनिक मैथिली साहित्यक विकास, आ डॉ० बालगोविन्द झा 'व्यथित', मैथिली साहित्यक इतिहास मे उल्लखित काल-विभाजन मत मे सेहो किछु भिन्नताक बोध होइत अछि। 'व्यथित' जीक काल-विभाजन रूप द्रष्टव्य अछि —
(i) प्राचीन काल — 700 ई० सँ 1325 ई० धरि
(ii) मध्य काल — 1325 ई० सँ 1860 ई० धरि
(iii) आधुनिक काल — 1860 ई० सँ अद्यपर्यन्त।

प्रस्तुत काल-विभाजनमे मैथिलीक प्राचीन कालक सभ सामग्री समावेश भऽ जाइत अछि। ओना कुल मिला कऽ मैथिली साहित्यक काल-विभाजन प्राचीन-काल, मध्य-काल, आ आधुनिक-काल रूपमे देखब विशेष समीचीन अछि। समय निर्धारण करब कठिन काज अछि। उपर्युक्त विश्लेषण मैथिली साहित्यक काल-विभाजन केँ स्पष्ट रूपसँ बोध करबैत अछि।

पाठ प्रस्तोता - डॉ० प्रवीण कुमार 'प्रभंजन'
सहायक प्राध्यापक
मैथिली विभाग, यू० आर० कॉ० रोसड़ा।

[signature] 01-11-25